❋ 28 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] यह भी बाप ने समझाया है आत्मा संस्कार ले जाती है। कोई सन्यासी की आत्मा होगी तो छोटेपन में ही उनको शास्त्र कण्ठ हो जायेंगे। फिर उनका नाम बहुत हो जाता है। अब तुम तो आये हो नई दुनिया में जाने लिए। वहाँ तो ज्ञान के संस्कार नहीं ले आ सकते। यह संस्कार मर्ज हो जाते हैं। बाकी आत्मा को अपनी सीट लेनी है नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार।

2] ज्ञान में कितनी साइलेन्स है इसको ईश्वरीय डात (देन) कहते हैं। साइंस में तो हंगामा ही हंगामा है। वह शान्ति को जानते ही नहीं।

3] भारतवासी ही वैकुण्ठ स्वर्ग को याद करते हैं। और धर्म वाले वैकुण्ठ को याद नहीं करते। वह सिर्फ शान्ति को याद करेंगे। सुख को तो याद कर न सकें। लॉ नहीं कहता।

4] जो जास्ती ज्ञान नहीं धारण कर सकते वह ऊंच पद भी पा नहीं सकते। पास विद् ऑनर हो न सकें। कर्मातीत अवस्था को पा न सकें, इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। याद की भी मेहनत है। ज्ञान धारण करने की भी मेहनत है।

5] साइंस वाले भी कितने होशियार होते जाते हैं। इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। भारतवासी हर बात का अक्ल वहाँ से सीखकर आते हैं। वह भी पिछाड़ी में आयेंगे तो इतना ज्ञान उठायेंगे नहीं। फिर वहाँ भी आकर यही इन्जीनियरिंग आदि का काम करेंगे। राजा-रानी तो बन न सके, राजा-रानी के आगे सर्विस में रहेंगे। ऐसी-ऐसी इन्वेन्शन निकालते रहेंगे।

6] सबके दूर दु:ख दूर करने वाला एक बाप के सिवाए और कोई मनुष्य हो न सके।

7] बाप नॉलेज देते हैं फिर वह गुम हो जाती है। यह एक ही पढ़ाई, एक ही बार, एक ही बाप से मिलती है। आगे चल तुम सबको साक्षात्कार होते रहेंगे कि तुम यह बनेंगे। परन्तु उस समय कर ही क्या सकेंगे। उन्नति को पा नहीं सकेंगे। रिजल्ट निकल चुकी फिर ट्रान्सफर होने की बात हो जायेगी। फिर रोयेंगे, पीटेंगे। हम बदली हो जायेंगे नई दुनिया के लिए।

8] ब्राह्मण जीवन का सबसे बड़े से बड़ा खजाना है सन्तुष्ट रहना। जहाँ सर्व प्राप्तियां हैं वहाँ सन्तुष्टता है और जहाँ सन्तुष्टता हैं वहाँ सब कुछ है। जो सन्तुष्टता के रन्त हैं वह सब प्राप्ति स्वरूप हैं, उनका गीत है पाना था वह पा लिया.... ऐसे सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनने की विधि है... मिले हुए सर्व खजानों को यूज़ करना क्योंकि जितना सफल करेंगे उतना खजाने बढ़ते जायेंगे।

9] होलीहंस उन्हें कहा जाता जो सदा अच्छाई रूपी मोती ही चुगते हैं, अवगुण रूपी कंकड़ नहीं।

❋ योग-

1] मनमनाभव, इसमें है– मुझे याद करो तो यह बनेंगे। फिर यही 84 जन्म लेते हैं। पुनर्जन्म न लेने वाल एक ही बाप है।

...2

❋ 28 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

[2]

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– इस शरीर को न देख आत्मा को देखो, अपने को आत्मा समझ आत्मा से बात करो, इस अवस्था को जमाना है, यही ऊंची मंज़िल हैं।

2] अपने को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझें, यह अवस्था जमानें में टाइम लगता है।

3] अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो और ज्ञान भी धारण करो। हमको बाप जैसा सम्पूर्ण ज्ञान सागर बनना है।

4] पहले-पहले तो निर्विकारीपना चाहिए ना इसलिए बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, **काम पर जीत पहनो। अपने को आत्मा समझो।**

❋ सेवा-

1] तुम जानते हो हमको बाबा से पूरा ही ज्ञान लेना है। वह अपने पास रखकर क्या करेंगे। अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन तो बच्चों को देना ही है। बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार उठाने वाले हैं। जो जास्ती उठाते हैं वही अच्छी सर्विस कर सकते हैं।

2] तुम समझते हो विश्व में शान्ति तो नई दुनिया में थी, वह है सुखधाम। अभी तो दु:ख-अशान्ति है। **यह भी समझाना है** तुम शान्ति चाहते हो, कभी अशान्ति हो ही नहीं, वह तो है शान्तिधाम और सुखधाम में।

3] बड़ का मिसाल भी तुम दे सकते हो। सारा झाड़ खड़ा है। फाउन्डेशन है नहीं। यह आदि सनात देवी-देवता धर्म है नहीं और सब खड़े हैं। सब अपवित्र हैं, इनको कहा जाता है मनुष्य। वह हैं देवतायें।

4] 84 जन्म भी मनुष्य लेते हैं। सीढ़ी दिखानी है कि तमोप्रधान बनते हैं तो हिन्दू कह देते हैं। देवता कह न सकें क्योंकि पतित हैं। ड्रामा में यह राज़ है ना। नहीं तो हिन्दू धर्म कोई है नहीं। आदि सनातन हम ही देवी-देवता थे। भारत ही पवित्र था, अब अपवित्र है। तो अपने को हिन्दू कहलाते हैं। हिन्दू धर्म तो कोई ने स्थापन किया नहीं है। **यह बच्चों को अच्छी रीति धारण कर समझाना है।** आजकल तो इतना टाइम भी नहीं देते हैं। कम से कम आधा घण्टा दें तब प्वाइंट सुनाई जाए। प्वाइंट तो ढेर हैं। फिर उनसे मुख्य-मुख्य सुनाई जाती हैं।

5] अब बाप गुह्य-गुह्य बातें सुनाते रहते हैं। ज्ञान का सागर है ना। सुनाते-सुनाते फिर पिछाड़ी में दो अक्षर कह देते अल्फ को समझा तो भी काफी है। अल्फ को जानने से बे को जान ही लेंगे। **इतना सिर्फ समझाओ तो भी ठीक है।**

6] तुम मेहनत करते हो, जल्दी चारों तरफ आवाज़ निकल जाये। फिर आपेही सेन्टर्स पर भागते रहेंगे। परन्तु जितनी देरी होती जायेगी, टू लेट होते रहेंगे। फिर कुछ जमा नहीं होगा। पैसे की दरकार नहीं रहेगी। तुमको समझाने लिए यह बैज़ ही काफी है। यह ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह बैज ऐसा है जो सब शास्त्रों को तन्त (सारा) इसमें है। बाबा बैज़ की बहुत महिमा करते हैं। वह समय आयेगा जो यह तुम्हारे बैज सब नयनों पर रखते रहेंगे।